कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानि सहितं नमामि ॥

शब्दार्थ:
कर्पूरगौरम् = जो कापुर के तरह गोरे रंग का है उसे; **करुण+अवतारम्** = जो करुणा का अवतार है उसे; **संसारसारम्** = जो इस समस्त संसार का सार और सारांस है उसे; **भुजग+इन्द्र+हारम्** = जो साँपोंके राजाको अपने गले में हार के भान्ती पहना है उसे; **सदा वसन्तम्** = जो हमेशा निवास करता है उसे; **हृदय+अरविन्दे** = कमल के समान कोमल व पवित्र हृदय में; **भवम्** = इस समस्त जगतको जन्म देनेवालेको, अर्थात जगत्पिता परमेश्वर शिवको; **भवानि सहितम्** = भवानी (इस जगतको जन्म देनेवालि माँ) के साथ; **नमामि** = मैं नमन करता हूँ ।

तात्पर्य:
जो कापुर के समान गोरे रंग का है उसे, जो करुणा का अवतार है उसे, जो इस समस्त संसार का सार और सारांस है उसे, जो फूलों के हार के भान्ती साँपोंके राजाको अपने गले में पहना है उसे, कमल के समान कोमल व पवित्र हृदय में जो हमेशा निवास करता है उसे, इस समस्त जगतको जन्म देनेवाले जगतपिता परमेश्वर शिवको व इस जगतको जन्म देनेवालि माँ भवानी के साथ मैं नमन करता हूँ ।

विवरण:
वेद पुराणों में ऐसा लिखा है कि भगवान शिवजी कापुर, हिम (बर्फ़) अथवा दूध के समान श्वेत वर्ण (सफ़ेद रंग) के है । इसलिये उन्हे कर्पूरगौर कहते है । क्यों कि वे सफ़ेद वर्ण के हैं इसलिये सही माईने में वे ही देवों के देव हैं । "देव" शब्द क निर्मान "दिव्" शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है 'श्वेत, सफ़ेद' ।

पौराणीक कथायें प्रमाणित करते हैं किस तरह शिवजी केवल पाणी या बेल पत्र चडाने मात्र से भक्तों पर प्रसन्न होते हैं और उनके दुःख–दर्द हर लेते हैं । ये सारें भक्ती कथायें साबित करते हैं कि भगवान शिवजी ही परम दयालु और करुणा के सागर है । वे किसी अन्य देवता के विपरीत सबसे जलद/शीघ्र प्रसन्न होते हैं । भगवान शिवजी जो २१ लोकों के स्वामी है, समस्त सृजन के पालनहार है, एक छोटेसे बेल पत्र से प्रसन्न होते है और तनिक भी संकोच न करते हुये, ना ही देव, मानव या असुर का भेदभाव करते हुये अपने भक्तों को उनके मनचाहे वर दे देते हैं । ये प्रमाणित करते हैं कि शिवजी कितने दयालु और करुणामय हैं ।

इसीलिये उन्हे समस्त जगत "अशुतोष" अर्थात 'शीघ्र प्रसन्न होनेवाला', "भोलेनाथ" अर्थात 'ऐसे नाथ/प्रभु जो भोले हैं, किसे भी निस्संकोच कोई भी वर दे देते हैं', और "भक्तवत्सल" अर्थात 'अपने भक्तों को माँ कि तरह प्यार करनेवाला' कहता है ।

शास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि "॥ ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्य, जीवो शिवैव नापरः ॥" अर्थात परब्रह्म परमेश्वर शिव ही सत्य है, जिने वेदों में "एकं सत्" कहा गया है । यह समस्त संसार भगवान की रची माया है, अक्षरशः मिथ्य है, झूठ है । वास्तव में हमारे अन्तर में वास करनेवाला जीव (जिसे आत्मा भी कहते है) साक्षात शिव ही है, और अन्य कुछ नही । इस शिव सत्य को जो जान ले वो समस्त संसार के गूढ सत्य को जान लेता है । इसलिये भगवान शिव ही इस समस्त संसार का मूल, सार और आधार है । यह समस्त संसार शिव है और शिव ही समस्त संसार है ।

भगवान शिव का रूप अनोखा है । ब्रह्म, विष्णु इत्यादि देवताओं के भान्ती वे स्वर्ण के आभूषण व मुकुट नही पहनते । उनके आभूषण तो जीवित साँप हैं, वे अपने गले में सारे सर्पों के राजा, शेशनाग, को पहनते है । इसीलिये उन्हे "भुजगेन्द्रहार", "नागेन्द्रहार", "नागभूषण", "सर्पाभूषण" और "नागनाथ" इत्यादि नामों से पुकारा जाता है । धार्मीक मान्यताओं में सर्प को ज्ञान या आद्यात्मज्ञान का प्रतीक माना जाता है [१] । सर्पों को शिव द्वारा पहने जाने का अर्थ है, भगवान शिव ही ईश्वरीय ज्ञान, ब्रह्मज्ञान, आद्यात्मज्ञान, शास्त्रज्ञान, विज्ञान इत्यादी समस्त ज्ञानों के स्वामी है ।

जो व्यक्ती शिव की भक्ती करता है, जो नित्य शिव कि पूजन, भजन, शिवनाम–स्मरन, शिव कीर्तन का श्रवण और शिव चिन्तन करता है उसके अन्तर्मन से व हृदय से सारे विकार दूर हो जाते हैं । उस शिवभक्त का हृदय पुण्यतीर्थों के समान पवित्र हो जाता है । ऐसे परमपवित्र शिवतत्त्व से भरे हृदय में भगवान शिव सदा निवास करते हैं । इसलिये भगवान शिव को "भक्तजनात्मक" अर्थात 'भक्तजनों के अन्दर वास करनेवाला परमात्मा' कहते है ।

भगवान शिवजी के अनेक रूपों में से एक है "भव" रूप । जब शिवजी "भव" के रूप में होते है तब माता पार्वतीजी उनके पत्नी "भवानी" के रूप में होती हैं । जब शिवजी "भव" के रूप में होते है तब वे सृजनकर्ता ब्रह्मा होते है । भव पुरुष है और भवानी प्रकृती, इन पुरुष और प्रकृती के मिलन से इस समस्त संसार का सृजन हुआ है । उन दोनों के मिलन से ही यह जगत अस्तित्व में आया है । "भव" नाम "भुव्" धातू से बना है । इस "भुव्" धातू का

१. प्रायः इसीलिये यहूदी धर्म ग्रन्थ "तोरा" में और ईसाई धार्म ग्रन्थ 'बाइबल' में भी लिखा गया है कि मानव जाती के आदिपूर्वज आदम (ॲडम) और हव्वा (ईव) को ज्ञान प्रदान करनेवाला (या ज्ञान प्राप्ती का मार्ग दिखानेवाला) अन्य कोई और नही एक सर्प ही था ।

अर्थ है 'होना; अस्तित्व में आना' । इसलिये "भव" का अर्थ होता है 'अस्तित्व में लानेवाला; सृजनकर्ता' और "भवानी" का अर्थ होता है 'अस्तित्व में लानेवाली; सृजन करने वाली' । इसलिये, यह समस्त जगत शिव और शक्ती का ही अनुरूप है ।

ऐसे अनादि और अनन्त शिव शम्भु की भक्ती ही मुक्ती का मार्ग है । इसलिये शिवभक्त कहते हैं "॥ निवेदयामि च आत्मानाम्, त्वम् एको गतिः परमेश्वरः ॥" अर्थात "हे परमेस्वर शिव! मैं खुद को आपके चरणों में समर्पित कर्ता हूँ, क्यों कि आप अकेले ही मेरे मुक्ती का धाम हो ।" सारे शिवभक्त अपने आराद्य शिवसे कहते है कि वे ही उनके मुक्ती का धाम हैं, उन्ही में सबको मोक्ष की प्राप्ती होती है इसलिये अपने आपको उन्हे समर्पित करते हैं। शिवजी की भक्ती ही सर्वश्रेष्ट और सबसे उत्कृष्ट भक्ती है जो भक्त को जन्म–बिमारी–बुढापा–मृत्यू–पुनर्जन्म के चक्कर से मुक्ती दिलाती है । क्यों कि केवल भगवान शिव ही मोक्ष प्रदान करते हैं अन्य कोई भी नही ।

भगवान शिवजी का जो भक्ती मार्ग है वह निवृत्ती मार्ग है । निवृत्ती का अर्थ है सबकुछ छोड छाड के खुदको परमेश्वर शिवके शरणमें अर्पित कर देना । यही कारण है की सारे महान शिवभक्त घर–संसार को छोड कर, जोगी (योगी) बनकर, गाँव–शहरों से दूर जंगलों में तपस्या करते हुये अथवा योग–साधना करते हुये मिलते हैं । एक शिवभक्त अपने शिवभक्ती में जैसे–जैसे एक–एक चरण आगे बढते जाता है, वैसे–वैसे वह शिवभक्त ईस्वरीय सत्य के करीब, और करीब होते जाता है और इस संसार के मोहमाया से, धन–दौलत के मोहमाया से, समाज के झुठे शन–ओ–शौकत से, समाज के बुराईयों से, समाज के ढकोसलों से, समाज के बंधनों से परे हटते जाता है । इसतरह शिवभक्त ईस्वरप्राप्ती के मार्ग पर अग्रसर होते जाता है और अंततः परमेश्वर शिवको प्राप्त कर मुक्ती को प्रात हो जाता है । इसका तात्पर्य यह है कि परमपिता परमेश्वर शिव की भक्ती ही मोक्ष प्राप्ती की मार्ग है । केवल भगवान शिव ही मोक्ष प्रदाता हैं ।

विशेष जानकारी:

इस श्लोक में भगवान शिवजी को उनके विशेषणों से, विशिष्टताओं से और गुणधर्मों से पुकारा गया है। इस श्लोक में जितने भी शिवजी के नाम है वे संस्कृत भाषा के व्याकरण के 'कार्मधाराय समास' और 'बहुव्रिहि समास' के अन्तर्गत है। और इस श्लोक के अधिकतर शिवजी के नाम (उदा. कर्पूरगौरम्, करुणावतारम्, संसारसारम्, भुजगेन्द्रहारम् और भवम् इत्यादि) 'द्वितीय विभक्ति' (Accusative Case) के रूप में है। और 'नमामि' क्रिया पद उत्तमपुरुष (First Person) के 'लट् लकार' (Present Tense) में है। और यह श्लोक त्रिष्टुभ् छन्द में लिखा गया है।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥